- Posted by on September 13, 2010 at 6:00am
-

बडती हुई आबादी जिम्मेदार कौन

भारतवर्ष की आबादी बहुत तेजी के साथ बढ़ रही है। देश के लिए सबसे अहम जटिल सवालों में निरंतर गति से बढ़ती हुई आबादी का सवाल एक अहम सवाल है। भारत को दुनिया के सबसे तेजी के साथ आर्थिक तरक्की करने वाले राष्ट्रों की कतार में अब चीन के साथ बाक़ायदा शामिल किया जाता है। उल्लेखनीय है कि आर्थिक क्षेत्र में चीन ने जापान को पीछे छोड़ते हुए, अमेरिका के पश्चात दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया है। चीन के साथ प्राय: भारत की तुलना होती रहती है, क्योंकि चीन भी ऐतिहासिक तौर पर भारत की तरह एक गुलाम देश रहा, जिसे साम्रज्यवादियों ने सदियों तक लूटा खसोटा बर्बाद किया। इतिहास में ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने चीन को युद्धों में पराजित कर उसे अफीम तक खाने पर विवश किया। जापानी साम्रज्यवादियों ने मंचूरिया पर कब्जा करके चीन को तहस नहस करने का प्रयास किया। 1948 में साम्यवादी इंकलाब के पश्चात चीन को साम्राज्यवाद के शिंकजे से निजात हासिल हुई। भारत की ऐतिहासिक कथा चीन के साथ बहुत सी बातों में एकरूपता रखती है। भारत और चीन विशाल भू-भाग और आबादी वाले राष्ट्र रहे। दोनों ही अत्यंत गौरवशाली अतीत वाले देश भी रहे। दोनों ही देशों को बाहरी हमलों को बारम्बार झेलना पड़ा। अनेक बोलियों, भाषाओं, धर्मो और जातियों वाला समाज दोनों देशों में विद्यमान रहा।

आजादी के बाद भारत ने बहुदलीय लोकतंत्र को अपनाया तो चीन ने एक दलीय साम्यवादी व्यवस्था का दामन थामा। विशाल बढती हुई आबादी के प्रश्न को लेकर चीन ने प्रारम्भ के 28 वर्षों तक कदाचित ध्यान नहीं दिया। भारत में भी परिवार नियोजन के अभियान ने सन् 70 के दशक में कुछ जोर पकड़ा था। चीन में तकरीबन इसी काल में कामरेड माओ की 1976 में मृत्यु के पश्चात कामरेड डेंग श्याओ पिंग की हुकूमत ने आबादी के नियंत्रण पर गंभीर कदम उठाए। सन् 1979 में साम्यवादी चीन में बहुत से परिवर्तनों के साथ एक परिवार एक बच्चा का नारा गूंज उठा। चीन की आबादी उस वक्त तकरीबन 100 करोड़ थी, जबकि भारत की आबादी लगभग 70 करोड़ थी। परिवार नियोजन पर चीन में बहुत सख्ती के साथ अमल किया गया। आज चीन की आबादी लगभग 150 करोड़ है और भारत की 120 करोड़। मोटे तौर पर इस अवधि में चीन की आबादी में 50 करोड़ की और भारत की आबादी में भी 50 करोड़ की जनसंख्या की बढोत्तरी को दर्ज किया गया। परिवार नियोजन शुरू करते वक्त भारत की आबादी चीन के मुकाबले लगभग 30 करोड़ कम थी, फिर भी दोनों देशों की आबादी विगत 30 वर्षों के दौरान तकरीबन 50 करोड़ अधिक बढी़। इसका स्पष्ट अर्थ है कि भारत की आबादी चीन की तुलना में 20 फीसदी अधिक बढी़। चीन ने अत्यंत कामयाबी के साथ अपनी आबादी की बढोत्तरी पर काबू पा लिया और भारत इस क्षेत्र में नाकाम सिद्ध हुआ।।

भारत में 70 के दशक में शुरू हुए परिवार नियोजन कार्यक्रम ने 25 जून 1975 को थोपे गए आपातकाल के दौरान एक विकृत रूप धारण किया। इंडियन ब्यूरोक्रेसी की आक्रमकता ने परिवार नियोजन कार्यक्रम पर कुछ बदनुमा दाग अंकित कर दिए। वर्ष 1977 के चुनाव में इंदिरा गॉधी और संजय गॉधी के साथ ही कॉग्रेस सरकार की शर्मनाक शिकस्त हुई। इस शिकस्त का अहम कारण बहुत कुछ परिवार नियोजन कार्यक्रम को जबरन थोपे जाने के कारण हुई आम जनमानस की नाराजगी को समझा विचारा गया। इसके बाद तो ऐसा कुछ दौर सियासी दौर शुरू हुआ कि भारतीय राजनीतिक दलों ने अपने ऐजेंडें से ही परिवार नियोजन कार्यक्रम को बेदखल कर दिया। राष्ट्रीय कॉग्रेस ने तो परिवार नियोजन का नाम तक लेना बंद कर दिया। यहॉ तक परिवार नियोजन कार्यक्रम का नाम तक बदलकर उसे परिवार कल्याण कार्यक्रम का बना दिया गया। देश की आबादी नियंत्रण के लिए जिस प्रबल राजनीतिक इच्छा शक्ति की दरकार है, उसका मुकम्मल आभाव विगत अनेक दशक से रहा है। परिणाम सामने आ चुका है कि भारत अब जनसंख्या विस्फोट के कगार पर है।

Reproduced by www.hobbyshobby.com with author's permission

राष्ट्र की समस्त आर्थिक प्रगति की रफ्तार को बढती हुई जनसंख्या और अमीर- गरीब के मध्य बढती खाई ने बेमानी करके रख दिया। विशेषकर उत्तर भारत के चार प्रांत, जिनमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार सबसे प्रमुख हैं, जनसंख्या विस्फोट के लिए जागृत ज्वालामुखी बन चुके हैं। इनसे सटे हुए झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, हरियाणा आदि में भी हालात अच्छे नहीं हैं। सिर्फ दक्षिण भारत के कुछ प्रातों ने विशेषकर तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक ने आबादी नियंत्रण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कामयाबी हासिल की। दक्षिण भारत में आबादी नियंत्रण का श्रेय तो वहां शिक्षा दीक्षा के क्षेत्र में हासिल की गई शानदार कामयाबी को जाता है। उत्तर भारत में तो आज भी आधी आबादी अनपढ़ है और बेहद गरीब है। यहां के आठ राज्यों को हाल ही में यूएन ऐजेंसी द्वारा सहारा अफ्रीका के देशों से भी अधिक भूखा नंगा करार दिया गया। ।

दक्षिण भारत ने इस अवधारणा को सत्य सिद्ध कर दिखाया है कि गहन पढाई लिखाई का आबादी नियंत्रण से बहुत गहरा अंतरसंबध है। उत्तर भारत में फैली ज़हालत ने यकीनन इस संपूर्ण इलाके को जनसंख्या विस्फोट के कग़ार तक पंहुचा दिया। आखिरकार भारतीय संसद ने बहुत हिलो हुज्जत के साथ शिक्षा को मौलिक संवैधानिक अधिकार बना दिया। देर से ही सही यह एक जबरदस्त कदम है जो यदि संजीदगी से उठाया गया तो भारत का मुस्तक़बिल बदल कर रख देगा। चीन ने बरसों बरस पहले बाल मजदूरी और अशिक्षा के अभिशाप से निजात प्राप्त कर ली थी। यही वह विशिष्ट कारण है कि चीन अब तो जापान से भी आगे निकाल रहा है। भारत को जनसंख्या विस्फोट के प्रश्न पर अब बहुत गंभीरता से विचारना होगा, अन्यथा राष्ट्र की समस्त आर्थिक तरक्की बेमानी सिद्ध हो सकती है। इसके लिए शिक्षा दीक्षा के प्रसार प्रचार के साथ ही साथ देश के प्रबुद्ध सचेत लागों को कुछ राजनीतिक सामाजिक कदम भी उठाने होगें जिससे कि आबादी नियंत्रण का प्रश्न प्रबल तौर पर राजनीतिक दलों, सामाजिक संस्थाओं और मीडिया के ऐजेंडे पर आ सके

पी के रॉय

Reproduced by www.hobbyshobby.com with authors permission